बी.बी. तायल

राजनीतिक सिद्धांत

सुलतान चन्द एण्ड संस

राजनीतिक सिद्धांत

Syllabus

University of Delhi

BA (Programme) Political Science

Courses for B.A. (Programme) Political Science SEMESTER-I

Paper I – Introduction to Political Theory
(62321101)
Core Course – (CC) Credit: 6

Course Objective

This course aims to introduce certain key aspects of conceptual analysis in political theory and the skills required to engage in debates surrounding the application of the concepts.

Course Learning Outcomes

After completing this course students will be able to:

- Understand the nature and relevance of Political Theory.
- Understand different concepts like liberty, equality, justice and rights.
- Reflect upon some of the important debates in Political Theory.

Unit I – What is Political Theory and what is its relevance?

Unit II – Concepts: Liberty, Equality, Justice, Rights

Unit III – Debates in Political Theory:

(a) Protective discrimination and principles of fairness?

(b) The Public vs. Private debate: Feminist Perspective Censorship and its limits

राजनीतिक सिद्धांत

दिल्ली विश्वविद्यालय के बी.ए. प्रोग्राम
प्रथम सिमेस्टर के लिए निर्धारित नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

बी.बी. तायल

एम.ए. (राजनीति), एम.ए. (इतिहास), एल-एल.बी.
पूर्व अध्यक्ष, राजनीति विभाग
श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स
पूर्व सदस्य, फैकल्टी ऑफ सोशल साइन्सेस
एवं कमिटि ऑफ कॉर्सेस इन पॉलिटिकल साइन्स
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सुलतान चन्द एण्ड संस
शैक्षिक प्रकाशक
नई दिल्ली

प्रकाशक :
सुलतान चन्द एण्ड सन्स
23, दरियागंज, नई दिल्ली.110002
दूरभाष : 23266105, 23277843, 23281876, 23286788, 23243183
फैक्स : 011-23266357
वैब साईट : www.sultanchandandsons.com
ईमेल : sultanchand74@yahoo.com; info@sultanchandandsons.com

ISBN : 978-93-5161-187-5 (TC 1194)

प्रथम संस्करण 2006
तृतीय संस्करण 2020

Price: ₹ 105.00

इस पुस्तक के प्रकाशन व विक्रय के अधिकार केवल प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।

EVERY GENUINE COPY OF THIS BOOK HAS A HOLOGRAM

In our endeavour to protect you against counterfeit/fake books, we have pasted a copper hologram over the cover of this book. The hologram displays the full visual image, unique 3D multi-level, multi-colour effects of our logo from different angles when tilted or properly illuminated under a single light source, such as 3D depth effect, kinetic effect, pearl effect, gradient effect, trailing effect, emboss effect, glitter effect, randomly sparking tiny dots, micro text, laser numbering, etc.

A fake hologram does not display all these effects.

Always ask the bookseller to put his stamp on the first page of this book.

All Rights Reserved: No part of this book, including its style and presentation, may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means–electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise without the prior written consent of the Publishers. Exclusive rights for publication, promotion and distribution are reserved with the Publishers.

Warning: Doing an unauthorised act in relation to a copyright work may result in both civil claim for damages and criminal prosecution.

Special Note: Photocopy or Xeroxing of educational books without the written permission of the Publishers is illegal and against Copyright Act. Buying and selling of pirated books is a criminal offence. Publication of key to this book is strictly prohibited.

General: While every effort has been made to present authentic information and avoid errors, the author and the publishers are not responsible for the consequences of any action taken on the basis of this book.

Limits of Liability/Disclaimer of Warranty: The publisher and the author make no representation or warranties with respect to the accuracy or completeness of the contents of this work and specifically disclaim all warranties, including without limitation warranties of fitness for a particular purpose. No warranty may be created or extended by sales or promotional materials. The advice and strategies contained herein may not be suitable for every situation. This work is sold with the understanding that the publisher is not engaged in rendering legal or other professional services. If professional assistance is required, the services of a competent professional person should be sought. Neither the publisher nor the author shall be liable for damage arising herefrom.

Disclaimer: The publisher have taken all care to ensure highest standard of quality as regards typesetting, proof-reading, accuracy of textual material, printing and binding. However, they accept no responsibility for any loss occasioned as a result of any misprint or mistake found in this publication.

Author's Acknowledgement: The writing of a Textbook always involves creation of a hug debt towards innumerable author's and publications. We owe our gratitude to all of them. We acknowledge our indebtedness in extensive footnotes throughout the book. If, for any reason, any acknowledgement has been left out we beg to be excused. We assure to carry out correction in the subsequent edition, as and when it is known.

Printed at : Al-Aziz Book Binder, UP

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक **'राजनीतिक सिद्धांत'** दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा बी.ए. प्रोग्राम, प्रथम सिमेस्टर के लिए निर्धारित नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार लिखी गई है। पुस्तक में 9 अध्याय शामिल हैं, जिनमें विशेषकर इन विषयों का विवेचन किया गया है – राजनीतिक सिद्धांत क्या है, राजनीतिक सिद्धांतों की प्रासंगिकता, स्वतंत्रता की अवधारणा, समानता की अवधारणा तथा अधिकार और न्याय की अवधारणाएँ। बहस के मुद्दों के अंतर्गत एक नया मुद्दा शामिल किया गया है, जो सार्वजनिक क्षेत्र बनाम निजी क्षेत्र (Public versus Private Debate) से संबंधित है।

अध्याय 1 में इस बात पर विशेषबल दिया गया कि विभिन्न वर्गों (किसान, कारीगर व छात्र समूहों) की समस्याओं का समाधान कई स्तरों पर हो सकता है, परंतु अतंतः ये सभी समस्याएँ 'राजनीतिक मुद्दे' बन जाते हैं, क्योंकि राजसत्ता का प्रयोग करने वाले व्यक्ति (सांसद, मंत्रिगण, प्रशासनिक अधिकारी और न्यायाधीश) ही ऐसे निर्णय ले सकते हैं तो सभी के लिए मान्य हों।

अध्याय 2 में राजनीतिक सिद्धांतों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला गया। राजनीतिक विचारधाराएँ 'सरकारों के वैधीकरण' (Legitimacy of Governments) में सहायक बनती हैं। विभिन्न राजनीतिक दल अपना प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए राष्ट्रवाद, साम्यवाद, समाजवाद और बहुजनवाद, आदि विचारधाराओं की दुहाई देते हैं। इन विचारधाराओं का प्रचार-प्रसार करके वे आम जनता का भरोसा हासिल करने में कामयाब होते हैं। इससे उनकी सत्ता कों सहज रूप से स्वीकार कर लिया जाता है अथवा यह कहिए कि सत्ता का वैधीकरण हो जाता है।

अध्याय 3 'स्वतंत्रता की अवधारणा' को लेकर है। भूख और गरीबी से छुटकारा पाना तो स्वतंत्रता है ही, पर इस संबंध में प्रायः 'व्यक्तिगत गौरव' (dignity of the individual) की भी बात की जाती है। इसके लिए जनता की 'सहमति' पर आधारित लोकतांत्रिक शासन-प्रणाली चाहिए।

अध्याय 4 में 'समानता लाने के उपायों' पर विशेष बल दिया गया अर्थात् समानता के लिए 'प्रतियोगिता का वातावरण' उचित है अथवा समाजवादी तौर-तरीके। यहाँ एक यह प्रश्न भी उठता है, कि क्या कम्युनिस्ट विचारधारा को 'समाजवाद' के अनुरूप माना जा सकता है? क्योंकि रूस, चीन, आस्ट्रिया या पोलेण्ड आदि देशों में जो कम्युनिस्ट व्यवस्था रही है उसमें दमन या कठोरता का जितना अंश था उतना समाजवाद और समानता का नहीं।

अध्याय 5 में 'न्याय की अवधारणा' को रेखांकित किया गया है। जॉन राल्स के न्याय-सिद्धांत के संदर्भ में यह बतलाया गया कि नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन ने इसे और ज़्यादा व्यापक बना दिया है। राल्स ने 'स्वतंत्रता' और 'समानता' की ओर हमारा ध्यान दिलाया, यह तो ठीक है, पर अर्मत्य सेन ने उसमें एक 'कारक' और जोड़ दिया और वह है 'क्षमता' (capability)। पदार्थों के 'समान वितरण' से ही सब लोग समान रूप से 'स्वतंत्र' बन जायेंगे, इस बात की कोई गारंटी नहीं है। 'क्षमताओं' में यदि फ़र्क है तो समान वितरण के बावजूद उनकी 'स्वतंत्रता' में भी अंतर आ जाएगा। क्षमताओं का फर्क तीन बातों पर निर्भर करता है : व्यक्ति की आयु (age), उसका लिंग (sex) और आनुवंशिक प्रतिभाएँ (genetic endowments)। इस बात को एक उदाहरण द्वारा भली-भाँति समझाया जा सकता है। राजनीतिक समानता के बावजूद क्या हम यह कह सकते हैं कि राजनीति के क्षेत्र में 'महिलाओं' को वह स्थान मिल पाया जो आज पुरूषों को प्राप्त है?

अध्याय 6 'अधिकार की अवधारणा' पर प्रकाश डालता है। दासता, बिना उचित कारण के बंदी बनाना, विचारों को प्रकट करने पर पाबंदियाँ, महिलाओं के प्रति अनुचित व्यवहार, विरोधियों का सफाया, बेरोज़गारी की स्थिति में राजकीय सहायता का अभाव, ये सभी बातें मानवीय गरिमा और अधिकारों के विरूद्ध हैं। इसलिए अधिकारों की समुचित जानकारी और इनके प्रति सम्मान की भावना जगाना बहुत ज़रूरी है।

अध्याय 7 में यह प्रश्न उठाया गया कि क्या 'संरक्षात्मक भेदभाव' (Protective Discrimination) न्याय और निष्पक्षता के सिद्धांतों के प्रतिकूल है? भारतीय संविधान-निर्माताओं को दलितों और जनजातियों की कमज़ोर स्थिति की पूरी जानकारी थी। इन्हें सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक लाभ दिलाने के लिए संविधान में विशेष प्रावधान किए गए हैं।

अध्याय 8 में 'सार्वजनिक क्षेत्र बनाम निजीक्षेत्र संबंधी विवाद' या बहस के लिए हमने तीन क्षेत्र चुने हैं – आर्थिक, सामाजिक-सांस्कृतिक और पारिवारिक, जिसमें 'नारीवादी परिप्रेक्ष्य' (Feminist Perspective) पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया गया। राष्ट्रीय महिला आयोग ने अपनी रिपोर्ट में बहुत-से सुझाव दिये थे, जैसे कि दूसरे विवाह के लिए पहली पत्नी की अनुमति अनिर्वाय कर देनी चाहिए जैसाकि कई मुसलमान देशों में होता है। कोई भी पर्सनल लॉ (Personal Law) संविधान से ऊपर नहीं है। इसी लिए उच्चतम न्यायालय द्वारा इसे निरस्त या रद्द किया गया।

अध्याय 9 'सेंसर व्यवस्था की सीमाएँ' बताता है। हाल ही की कुछ घटनाएँ बताती हैं कि अमेरिका और यूरोप में पिछले दिनों 'असहनशीलता' (Intolerance) का चलन बढ़ा है। अमेरिका में एक अश्वेत नागरिक जॉर्ज फ्लायॅड की पुलिस हिरासत में दर्दनाक मौत एक अत्यंत दुखद घटना थी। पर इसके बाद हुए उग्र प्रदर्शनों ने इतना हिंसक रूप ले लिया कि देश के कई भागों में कर्फ्यू लगाना पड़ा। बाद में यूरोप के भी कई देशों में उग्र प्रदर्शन होने लगे। इस प्रकार उदार लोकतांत्रिक देशों में भी 'अनुदारवाद' (illiberalism) बढ़ रहा है। इस तरह की परिस्थितियों में 'सेंसरशिप' और 'विचार व अमिव्यक्ति की स्वतंत्रता' पर विचार करना बड़ा प्रासंगिक बन गया है।

पुस्तक के लेखन में जिन विद्वानों और पत्रकारों की कृतियों से लाभ उठाया गया, उनके प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ। सुलतान चन्द एण्ड सन्स का मैं आभारी हूँ, जिनके अनथक प्रयास से ही पुस्तक इतने अच्छे कलेवर में और इतना शीघ्र आपके हाथों में आ सकी।

बी.बी. तायल

विषय-सूची

खण्ड–1 राजनीतिक सिद्धांत की प्रकृति और प्रासंगिकता
(Nature and Relevance of Political Theory)

1. राजनीतिक सिद्धांत क्या है? **3-13**
(What is Political Theory?
इस विषय की भूमिका 3
राजनीतिक सिद्धांत का अर्थ 4
राजनीतिक सिद्धांत की प्रमुख विशेषताएँ 5
राजनीतिक सिद्धांत का विषय-क्षेत्र 6
राजनीतिक सिद्धांत की प्रकृति अथवा प्रकार 9
इस अध्याय का सार-संक्षेप 12
प्रश्न 13

2. राजनीतिक सिद्धांत की प्रासंगिकताः राजनीतिक सिद्धांतों की क्या आवश्यकता है? **14-20**
(Relevance of Political Theory: Why do we need political theories?)
इस विषय की भूमिका 14
राजनीतिक सिद्धांत की प्रासंगिकताः महत्त्व और उपयोगिता 14
क्या राजनीतिक सिद्धांत पतन की ओर उन्मुख है? 17
इस अध्याय का सार-संक्षेप 20
प्रश्न 20

खण्ड–2 विभिन्न अवधारणाओं की स्पष्ट समझ
(A Clear Understanding of Different Concepts)

3. स्वतंत्रता की अवधारणा **23-38**
(The Concept of Liberty)
इस विषय की भूमिका 23
स्वतंत्रता का अर्थः स्वतंत्रता के दो दृष्टिकोण 23
स्वतंत्रता के विभिन्न प्रकार 29
स्वतंत्रता और कानून 31
स्वतंत्रता की रक्षा के उपाय 33

स्वतंत्रता की मार्क्सवादी अवधारणा 34
इस अध्याय का सार-संक्षेप 36
प्रश्न 38

4. समानता की अवधारणा **39-51**
(The Concept of Equality)
इस विषय की भूमिका 39
समानता का अर्थ 39
समानता किस लिएः समानता क्यों आवश्यक है? 42
समानता के विभिन्न प्रकार अथवा आयाम 43
स्वतंत्रता और समानता में संबंध 46
समानता और न्याय 49
इस अध्याय का सार-संक्षेप 50
प्रश्न 51

5. न्याय की अवधारणा **52-71**
(The Concept of Justice)
इस विषय की भूमिका 52
न्याय के संबंध में यूनानी विचारकों की धारणा 52
न्याय के संबंध में उदारवादियों की धारणा 54
न्याय के संबंध में मार्क्सवादियों की धारणा 54
न्याय की परिभाषा 54
न्याय का स्वरूप अथवा विशेष लक्षण 55
न्याय के कानूनी, राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक पहलू (आयाम) 56
वितरणात्मक न्याय की अवधारणा 59
जॉन राल्स का न्याय-सिद्धांत 60
न्याय का नारीवादी दृष्टिकोण 65
न्याय का उपेक्षितवर्गवादी दृष्टिकोण 67
इस अध्याय का सार-संक्षेप 69
प्रश्न 71

6. अधिकार की अवधारणा **72-96**
(Concept of rights)
इस विषय की भूमिका 72
अधिकार क्या है अथवा अधिकार क्यों आवश्यक हैं? 72
अधिकारों की प्रकृति और विशेषताएँ 73
अधिकार 'राज्य' की शक्ति को सीमित करते हैं 74

अधिकारों का आधार और अधिकारों के बारे में विभिन्न सिद्धांत 75
लोकतांत्रिक अधिकार : आधुनिक राज्य नागरिकों को कौन-कौन से अधिकार प्रदान करते हैं? 83
मानव अधिकार 86
मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा 87
इस अध्याय का सार-संक्षेप 93
प्रश्न 95

खण्ड–3 राजनीतिक सिद्धांत में बहस के कुछ मुद्दे
(Debates about Some Issues in Political Theory)

7. क्या संरक्षात्मक भेदभाव निष्पक्षता के सिद्धांतों के प्रतिकूल है? **99-105**
(Is Protective Discrimination against Principles of Fairness?)
इस विषय की भूमिका 99
संरक्षात्मक भेदभाव 99
अनुसूचित जातियों और जनजातियों के कल्याण के उपाय 100
अन्य पिछड़े वर्गों का विकास 100
अल्पसंख्यकों का कल्याण 101
मज़हब के आधार पर आरक्षण 101
संयुक्त राज्य अमेरिका में की गई सकारात्मक कार्रवाई 102
संरक्षात्मक भेदभाव के गुण 102
संरक्षात्मक भेदभाव की आलोचना 103
इस अध्याय का सार-संक्षेप 104
प्रश्न 105

8. सार्वजनिक क्षेत्र बनाम निजी क्षेत्र संबंधी विवाद : नारीवाद परिप्रेक्ष्य **106-115**
(The Public Versus Private Debate : Feminist Perspective)
इस विषय की भूमिका 106
आर्थिक विकास : निजी उद्यम और सार्वजनिक क्षेत्र 106
निजी क्षेत्र के माध्यम से विकास 106
सार्वजनिक क्षेत्र के माध्यम से विकास 107
वैश्वीकरण ने हमारी अर्थव्यवस्था को चुनौती दी है। 107
कल्याणकारी राज्य की प्रासंगिकता ज़रूर बनी रहेगी 108
समाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियाँ जो निजी दायरे में आती हैं और राज्य के सीधे नियंत्रण से बाहर हैं 109
सर्वाधिकारवादी कम्युनिस्ट व्यवस्था में 'राज्य' और 'सिविल समाज' का अंतर मिट गया 109
सिविल समाज के विषय में उदार-लोकतांत्रिक धारणा 109
सिविल समाज की अनिवार्य शर्तें : स्वतंत्रता और न्याय को प्रोत्साहन देने में इसकी भूमिका 110
भारत में सिविल समाज की उपलब्धियाँ 110

सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र संबंधी विवाद : नारीवादी परिप्रेख्य 111
नारीवादी परिप्रेक्ष्य 112
इस अध्याय का सार-संक्षेप 114
प्रश्न 115

9. सेंसर व्यवस्था और इसकी सीमाएँ **116-124**
(Censorship and its Limits)
इस विषय की भूमिका 116
सेंसरशिप का क्या अर्थ है? 116
अधिकांश समाजों में सेंसर व्यवस्था लागू रही है 117
पूर्व सोवियत संघ, चीन, क्यूबा और सउदी अरब की सत्तावादी सरकारें 118
20वीं सदी के उदार लोकतांत्रिक राज्य 118
उदार और लोकतांत्रिक समाज में विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का क्या महत्त्व है? 119
सेंसर व्यवस्था को किन आधारों पर न्यायसंगत ठहराया जाए? 119
सेंसर व्यवस्था की क्या सीमाएँ हैं? 122
इस अध्याय का सार-संक्षेप 123
प्रश्न 124

PLEASE CUT ALONG THIS LINE AND MAIL TO US

Feedback Prize Contest

NO ENTRY FEE

We propose to mail to our readers a 'Supplement' relevant to the subject-matter of this book or 'A Word about Your Career' or 'Pearls of Wisdom' or 'Secrets of Success' on receipt of your 'Feedback'. Further, you can win a prize too!! For this purpose, please fill this coupon and send it along with your 'Feedback' to us at M/s Sultan Chand & Sons, 23, Daryaganj, New Delhi-110 002, at an early date. To avoid duplication, please inform what you had received earlier. This is without obligation.

How did you come to know of this book : Recommended by your Teacher/Friend/ Bookseller/Advertisement .....

Date of Purchase .....

Year/Edition of the book purchased by you .....

Month and Year of your next examination .....

Name and Address of the Supplier .....

.....

Name of the Teacher who recommended you this book .....

Name and Address of your Institution .....

.....

.....

Your Name .....

Your Residential Address .....

.....

Course for which you are studying .....

Please enclose latest Syllabus/Question Paper .....

You bought this book because .....

.....

.....

Feedback

Now You Can Win a Prize Too!!

Dear Reader

Reg. **राजनीतिक सिद्धांत – बी.बी. तायल**

Has it occurred to you that you can do to the students/the future readers a favour by sending your suggestions/comments to improve the book? In addition, a surprise gift awaits you if you are kind enough to let us have your frank assessment, helpful comments/specific suggestions in detail about the book on a separate sheet as regards the following:

1. Which topics of your syllabus are inadequately or not discussed in the book from the point of view of your examination?

   .....
   .....
   .....

2. Is there any factual inaccuracy in the book? Please specify.

   .....
   .....
   .....

3. What is your assessment of this book as regards the presentation of the subject-matter, expression, precision and price in relation to other books available on this subject?

   .....
   .....
   .....

4. Which competing books you regard as better than this? Please specify their authors and publishers.

   1. .....
   2. .....
   3. .....

5. Any other suggestion/comment you would like to make for the improvement of the book.

   .....
   .....
   .....

Further, you can win a prize for the best criticism on presentation, contents or quality aspect of this book with useful suggestions for improvement. The prize will be awarded each month and will be in the form of our publications as decided by the Editorial Board.

Please feel free to write to us if you have any problem, complaint or grievance regarding our publications or a bright idea to share. We work for you and your success and your Feedback are valuable to us.

Thanking you.

Yours faithfully,
Sultan Chand & Sons

राजनीतिक सिद्धांत

दिल्ली विश्वविद्यालय के बी.ए. प्रोग्राम प्रथम सिमेस्टर
के लिए निर्धारित नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

बी.बी. तायल

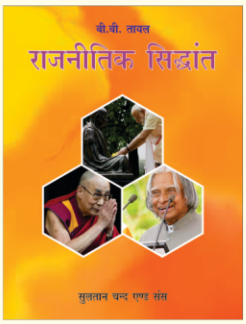

प्रस्तुत पुस्तक में स्वतंत्रता, समानता व न्याय आदि विभिन्न अवधारणाओं का विस्तार से वर्णन किया गया है। राजनीतिक विचारधाराएँ सरकारों के वैधीकरण में सहायक बनती हैं। राष्ट्रवाद, साम्यवाद, समाजवाद अथवा बहुजनवाद आदि विचारधाराओं का प्रचार-प्रसार करके विभिन्न राजनीतिक दल आम जनता का भरोसा हासिल करने में कामयाब होते हैं। पुस्तक में कई महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाए गये, यथा – क्या कम्युनिस्ट विचारधारा को 'समाजवाद' के अनुरूप माना जा सकता है ? कम्युनिस्ट देशों में जो व्यवस्था रही है उसमें दमन या कठोरता का जितना अंश था उतना समाजवाद और समानता का नहीं। राजनीतिक समानता के बावजूद क्या हम यह कह सकते हैं कि राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं को वह स्थान मिल पाया जा आज पुरूषों को प्राप्त है? क्या किसी भी समाज के 'पर्सनल लॉ' को संविधान और मूलभूत अधिकारों से उच्चतर माना जा सकता है? सेंसर व्यवस्था की क्या सीमाएँ हैं? कौन-से ऐसे कारण हैं कि उदारवाद का गढ़ कहलाने वाले अमेरिका और पश्चिमी यूरोप के देशों में भी पिछले दिनों असहनशीलता का चलन बढ़ा है। इन प्रश्नों पर बहस होनी चाहिए। मैंने विषयवस्तु को ऐसे ढाँचें में रखने का प्रयास किया जिससे छात्र-छात्राओं की चिंतन शक्ति का विकास होने की अपेक्षा की जाती है।

बी.बी. तायल : लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.ए. (राजनीति विज्ञान) परीक्षा उच्च श्रेणी में पास करने के बाद एम. ए. (इतिहास) परीक्षा में पंजाब विश्वविद्यालय और एल-एल.बी. (शैक्षणिक) परीक्षा में मेरठ विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। करीब एक दशक तक पंजाब व आगरा विश्वविद्यालयों के पोस्टग्रेजुएट कॉलेजों में अध्यापन कार्य के उपरांत 1964 में दिल्ली विश्वविद्यालय के श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स में वरिष्ठ प्रवक्ता का पद्भार ग्रहण किया और पैंतीस वर्षों की निरन्तर सेवा के पश्चात् वहीं से सेवानिवृत्त। कई अन्य महत्त्वपूर्ण पुस्तकों के रचयिता, यथाः 'माडर्न पॉलिटिकल सिस्टम्स', 'तुलनात्मक शासन और राजनीति', 'राजनीतिक अवधारणाएँ और भारतीय लोकतंत्र' तथा 'पॉलिटिकल कॉन्सेप्ट्स एण्ड इंडियन डेमोक्रेसी'। सहलेखक : 'डेमोक्रेसी एण्ड गवर्नेंस इन इंडिया' तथा 'पॉलिटिक्स, एथिक्स एण्ड सोशल रिस्पांसेबिलिटी ऑफ बिजनेस'। हिन्दी विश्वभारती समिति, लखनऊ द्वारा प्रकाशित 'विश्वभारती' (एनसाइक्लोपीडिया) प्रथम खण्ड के लिए कई प्रविष्टियों का लेखन।

Dedicated to the Service of Education
SULTAN
1950
Celebrating Legacy of 70 Years

Sultan Chand & Sons
Publishers of Standard Educational Textbooks
23 Daryaganj, New Delhi-110002
Phones: 23243183, 23247051, 23277843, 23281876, 23266105
Email: sultanchand74@yahoo.com, info@sultanchandandsons.com
Fax: 011-23266357; Website: www.sultanchandandsons.com

ISBN 93-5161-187-6
9 789351 611875

TC-1194